क्रिया और धातु

सकर्मक एवं अकर्मक क्रिया

क्रिया

कर्त्ता जिस कर्म को करता है, उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे: जाना, खाना, पीना, खेलना, पढ़ना आदि सब क्रियाएँ हैं।

अब आपके मन में प्रश्न उठेगा कि क्रिया तो ठीक है, पर धातु क्या है?

धातु क्रिया का मूल शब्द है। संस्कृत में क्रिया के स्थान पर धातु रुप का प्रयोग होता है।

जैसे: गच्छति क्रिया 'गम्' धातु से बनी है। एक ही धातु से हम वचन, पुरुष तथा लकार (काल) के अनुरुप रुप बना सकते हैं।

क्रिया के भेद

क्रिया के दो भेद होते हैं:

(1) सकर्मक क्रिया

(2) अकर्मक क्रिया

सकर्मक क्रिया

ऐसी क्रियाएं जिनके साथ कर्म होना अनिवार्य होता है, सकर्मक क्रिया कहलाते हैं।

जैसे: बालक: <u>पुस्तकं</u> पठति।

बालक पुस्तक पढ़ता है।

अहं <u>गृहं</u> गच्छामि।

मैं घर जाता हूँ।

अकर्मक क्रिया

ऐसी क्रियाएं जिनके साथ कर्म की आवश्यकता नहीं होती, अकर्मक क्रिया कहलाते हैं।

जैसे: रानी यतते।

रानी यत्न करती है।

लता चलति।

लता चलती है।

काल एवं धातु परिचय

क्रिया को समय के अनुसार हम विभिन्न रुपों में बाँट देते हैं। इसे संस्कृत में लकार (काल) कहते हैं।

संस्कृत भाषा में पाँच लकार होते हैं:

1. लट् लकार (वर्तमान)

2. लृट लकार (भविष्यत काल)

3. लङ् लकार (भूतकाल)

4. लोट लकार (आज्ञार्थक काल)

5. विधि लिङ्ग लकार (विधिसूचक काल)

यहाँ हम आपको केवल लट् लकार (वर्तमान काल) तथा लृट् लकार के बारे में बताएगें।

लट् लकार (वर्तमान काल)

इस काल में कार्य चल रहा होता है। हिन्दी के वाक्यों के अन्त में 'ता है', 'ती है', 'ते है' आदि शब्द लगे होते हैं।

जैसे: वह पढ़ता है।

स: पठति।

वे दोनों हँसते हैं।

तौ हसत:।

वे खाते हैं।

ते खादन्ति।

वह जाने की इच्छा करती है।

सा गन्तुम इच्छति।

वे दोनों सिनेमा देखती हैं।

ते चलचित्रं पश्यतः

वे सब कोल्डड्रिंक्स पीती हैं।

ताः शीतलपेयानि पिबन्ति।

तुम घूमने के लिए जाती हो।

त्वं भ्रमणाय गच्छसि।

तुम दोनों चित्र देखते हो।

युवाम् चित्रे पश्यथः।

आप दी गई धातुओं के आधार पर लट् लकार में कम-से-कम 10-15 वाक्य अवश्य बनाएं।

अब हम लृट् (भविष्यत्) लकार के बारे में चर्चा करेंगे।

लृट् लकार (भविष्यत काल)

इस काल में कार्य के होने की संभावना होती है। हिन्दी के वाक्यों के अन्त में 'गा है', 'गी है' तथा 'गे हैं' आदि शब्द लगे होते हैं।

जैसे: मैं घर जाऊँगा।

अहं गृहं गमिष्यामि।

हम दोनों पुस्तक पढ़ेगें।

आवाम पुस्तकं पठिष्यावः।

हम सब पार्क में खलेगें।

वयम उद्याने खेलिष्यामः।

वह सुबह टहलेगी।

सा: प्राते: भ्रमिष्यति।

अर्जुन युद्ध के लिए जाएगा।

अर्जुन: युद्धाय गमिष्यति।

हम आपको घर ले जाएगें।

वयं त्वां गृहं नेष्याम:।

तुम सब्जी ले जाओगे।

त्वं शाकं नेष्यसि।

सीता रामायण पढ़ेगी।

सीता रामायणं पठिष्यति।

बालक: फल खाते हैं।

बालका: फलानि खादिष्यन्ति।

पेड़ से पत्ते गिरेंगे।

वृक्षात् पत्राणि पतिष्यन्ति।

अब हम आपको कुछ धातु रुपों का परिचय दे रहे हैं जिसके आधार पर आप पहले बताए गए पुरुषों, वचनों तथा लिंगों के अनुसार वाक्य बना सकते हैं।

कर्ता/पुरुष	हस् धातु	लट् लकार	
प्रथम पुरुष	हसति	हसत:	हसन्ति
स:	स: हसति	वह हँसता है।	
तौ	तौ हसत:	वे दोनों हँसते हैं।	
ते	ते हसन्ति।	वे सब हँसते हैं।	

कर्ता/पुरुष			
मध्यम पुरुष	हससि	हसथ:	हसथ
त्वम्	त्वं हससि	तुम हँसते हो।	
युवाम्	युवां हसथ:	तुम दोनों हँसते हो	
यूयम्	युयै हसथ	तुम सब हँसते हो	

कर्ता/पुरुष			
उत्तम पुरुष	हसामि	हसाव:	हसाम:
अहम्	अहं हसामि।	मैं हँसता हूँ।	
आवाम्	आवां हसाव:	हम दोनों हँसते हैं।	
वयम्	वयं हसाम:	हम सब हँसते हैं।	

कर्ता पुरूष				क्रिया		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	स:	तौ	ते	हसति	हसत:	हसन्ति
मध्यम पुरूष	त्वम्	युवाम्	यूयम्	हससि	हसथ:	हसथ
उत्तम पुरूष	अहम्	आवाम्	वयम्	हसामि	हसाव:	हसाम:

नियम

कर्ता जिस पुरूष और वचन का होगा, क्रिया भी उसी पुरूष एवं वचन का होना चाहिए।

कर्ता प्रथम पुरूष एकवचन स: के साथ क्रिया हसति भी प्रथम पुरूष एकवचन क्रिया है।

कर्ता प्रथम पुरूष एकवचन तौ के साथ क्रिया हसत: भी द्विवचन पुरूष एकवचन क्रिया है।

कर्ता प्रथम पुरूष एकवचन ते के साथ क्रिया हसन्ति भी बहुवचन पुरूष एकवचन क्रिया है।

लृट् लकार

	एकवचन	**द्विवचन**	**बहुवचन**
प्रथम पुरुष	हसिष्यति	हसिष्यत:	हसिष्यन्ति।
मध्यम पुरुष	हसिष्यसि	हसिष्यथ:	हसिष्यथ।
उत्तम पुरुष	हसिष्यामि	हसिष्याव:	हसिष्याम:

इसी प्रकार पठ्, चल, खेल, खाद, पा (पिब्,), दृश (पश्य), धाव, पत्, भ्रम, लिख्, इष (इच्छा), मिल् धातुओं के भी रुप बनेगें।

नोट: परिवर्तनशील धातुओं के रूप लट लकार में बदल जाते हैं।
जैसे: पा – पिब्, स्था – तिष्ठ्, गम – गच्छ, दृश – पश्य।

आपको बाक्स को ऐसे ही रखना हैं। तथा उनके आगे जो धातु रुप बनाना है, उसे आगे जोड़ देना है।

जैसे: अगर आप पठ् धातु रुप बनाना चाहते हैं:

पठि	ष्यति	पठि	ष्यत:	पठि	ष्यन्ति
पठि	ष्यसि	पठि	ष्यथ:	पठि	ष्यथ

पठि	ष्यामि	पठि	ष्याव:	पठि	ष्याम:

पा (पिव) तथा दृश (पश्य) धातु लृट् लकार के रुप थोड़े से अलग होंगे। **जैसे** -

दृश	द्रक्ष्यति	द्रक्ष्यत:	द्रक्ष्यन्ति
	द्रक्ष्यसि	द्रक्ष्यथ:	द्रक्ष्यथ
	द्रक्ष्यामि	द्रक्ष्याव:	द्रक्ष्याम:
पा (पास्य)	पास्यति	पास्यत:	पास्यन्ति
	पास्यसि	पास्यथ:	पास्यथ
	पास्यामि	पास्याव:	पास्याम:
स्था धातु (बैठना)लट् लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	तिष्ठति	तिष्ठत:	तिष्ठन्ति
मध्यम पुरुष	तिष्ठसि	तिष्ठथ:	तिष्ठथ
उत्तम पुरुष	तिष्ठामि	तिष्ठाव:	तिष्ठाम:
लृट लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन

प्रथम पुरुष	स्थास्यति	स्थास्यत:	स्थास्यन्ति
मध्यम पुरुष	स्थास्यसि	स्थास्यथ:	स्थास्यथ
उत्तम पुरुष	स्थास्यामि	स्थास्याव:	स्थास्याम:
गम् धातु (जाना) लट् लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गच्छति	गच्छत:	गच्छन्ति
मध्यम पुरुष	गच्छसि	गच्छथ:	गच्छथ
उत्तम पुरुष	गच्छामि	गच्छाव:	गच्छाम:
लृट् लकार			
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरुष	गमिष्यति	गमिष्यत:	गमिष्यन्ति
मध्यम पुरुष	गमिष्यसि	गमिष्यथ:	गमिष्यथ
उत्तम पुरुष	गमिष्यामि	गमिष्याव:	गमिष्याम:

इसी प्रकार 'चिन्त' तथा 'नी' धातुओं के रुप बनेगें।

लङ्. लकार – भूतकाल

संस्कृत के जिन वाक्यों में कार्य हो चुका होता है, उन्हें हम लङ्. लकार कहते हैं। क्रिया के आगे 'अ' जुड़ता है।

	पठ् धातु		
	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथम पुरूष	अपठत	अपठताम्	अपठन
मध्यम पुरूष	अपठ:	अपठतम्	अपठत
उत्तम पुरूष	अपठम्	अपठाव	अपठाम

जैसे - स: पाठम् अपठत्

उसने पाठ पढ़ा।

अहम् गृहम् अगच्छम्

मैं घर गया।